वही उस पर रोक भी लगाती है, पर साहित्य तो कल्पना का अपना क्षेत्र है। दोनों में भेद क्या है, यह कहना मुश्किल है, लेकिन दोनों का उस जगत् से सम्बन्ध दिखाई देता है जिसमें हम आमतौर पर रहते हैं, और 'जीते' हैं।

दोनों में ही, 19वीं शताब्दी के अंत व 20वीं के प्रारंभ में एक ऐसे स्वातन्त्र्य का बोध जागा जिसके परिणाम अभी तक स्पष्ट नहीं हुये हैं। कल्पना की उड़ान जैसे ही मनुष्य की किसी भी शक्ति के केन्द्र में स्थापित होती है या सहज रूप में स्वीकार की जाती है उसके बाद उस पर रोक लगाना मुश्किल है। आदमी यह जानने की कोशिश करता है कि आखिर उसकी स्वतंत्रता की क्या कोई सीमा है और अगर कोई सीमा है भी तो उसे क्या और कम नहीं किया जा सकता। पहले, ये सीमायें स्पष्ट थीं, हज़ारों साल तक, कम से कम कुछ क्षेत्र में साफ दिखाई देती थीं, गणित इसका सर्वोच्च उदाहरण था, और कला भी। पर, जैसे ही ये सीमायें हटने लगीं वैसे ही आदमी ने यह महसूस किया कि वह सब कुछ कर सकता है। लेकिन इसके साथ ही उसे ये भी आभास हुआ कि कल्पना का क्षेत्र, विकल्प का क्षेत्र है। जहाँ वो यह भी सोच सकता है और वो भी, ये भी कर सकता है और वो भी। पर, न दोनों साथ-साथ सोच सकता है और न साथ-साथ कर सकता है। आजादी ज़रूर है, और उस आजादी में जो विकल्प हैं उनकी संख्या भी बढ़ी है। पर उन विकल्पों के बीच सामंजस्य व सम्बन्ध कैसे बिठाया जाये, रहने के लिए, सोचने के लिए, जीने के लिए, इसका उसके पास कोई ज़वाब दिखाई नहीं देता।

विकल्प बढ़ते गये, सब कुछ ठीक लगने लगा, जिसकी जो चाहे मर्ज़ी सोचे, करे, पर इससे जो समस्यायें पैदा होती हैं उनसे निस्तारा कैसे हो, इसका उसके पास कोई ज़वाब दिखाई नहीं देता। आज आदमी की अवस्था कुछ ऐसी ही है, ज़मीन पर खड़े होने के लिए उसके पास कोई ठोस या मज़बूत जगह नहीं है और न ही आसमान में उसे कोई ऐसा ध्रुव तारा दिखाई देता है जो उसे उड़ने के लिए, पंख पसार कर उड़ान भरने के लिए, दिशा दे सके।

❑

जोड़, घटाना, गुणा, भाग : अन्तहीन प्रक्रियाओं से अनन्त की प्राप्ति और उसकी समस्याएँ

हिसाब-किताब हर एक को करना पड़ता है। कहावत है, दो और दो चार होते हैं, पर इसके बारे में सोचा बहुत कम गया है और जिन लोगों ने सोचा है, उनके सोचने का पता बहुत ही कम लोगों को है। आखिर 'दो' क्या होता है? होता तो एक ही है, फिर 'एक' और 'एक' 'दो' कैसे हो जाते हैं। इसके लिए सबको पता है कि उनको जोड़ने की ज़रूरत है। पर 'जोड़ना' क्या होता है? अगर हम जोड़ें नहीं तो चाहे कितने ही 'एक' हों उनसे कुछ बनेगा नहीं। लेकिन यह जोड़ने की प्रक्रिया बहुत ही अजीब है क्योंकि ये कभी भी न खत्म होती है न खत्म हो सकती है। कितनी ही बड़ी संख्या लीजिये उसमें फिर 'एक' जोड़ा जा सकता है और इस तरह 'यह जोड़ना' एक अनन्तता को जन्म देता है जिसको समझना मुश्किल है, लाख, दो लाख, करोड़, दस करोड़, अरब, दस अरब, शंख, महाशंख कितना ही गिनते जाओ इसका खत्म होना असंभव है। एक गणितज्ञ ने सोचा कि वह ऐसी संख्या बता सकता है जिससे बड़ी संख्या हो ही नहीं सकती। उसने उसका नाम 'गूगोल' दिया और वह संख्या थी एक के बाद दस लाख सिफ़र। इसके बाद उसने इससे भी बड़ी संख्या सोची, जिसका नाम Gogol Plex दिया, और वह संख्या थी एक के बाद इतने गूगोल लगायें कि आप लिखते-लिखते थक जायें। एक के बाद कितने 'शून्य' लगायेंगे? उसकी यह मेहनत बेकार थी, क्योंकि आप थक जायें तो भी संख्या तो आगे बढ़ायी ही जा सकती है।

पर इससे भी आश्चर्य की बात यह है कि दुनिया में जितनी चीज़ें हैं वह उस संख्या से जो आदमी बना सकता है कम ही होंगी। यह बात शायद अजीब लगे कि आखिर कोई आदमी दुनिया की चीज़ों को 'गिनने' क्यों बैठेगा, पर आदमी अजीब है और उसने ऐसी कोशिश की थी। इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध वैज्ञानिक एडिंगटन ने ऐसी 'बेवकूफ़ी' की कोशिश की थी। बेवकूफ़ी इसलिए कि अगर किसी समय में जितनी भी चीज़ें हैं उनकी गिनती कर भी ली जाये तो आगे आने वाले

समय में जो चीज़ें होंगी उनकी गिनती कैसे की जायेगी। हो सकता है कि उनका मतलब उन परमाणुओं या अणुओं से था जो संसार को निर्मित करते हैं पर आज जब वे सब छोटी से छोटी चीज़ें जिनसे परमाणुओं के बनने की बात कही जाती है, जैसे इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन, न्यूट्रोन आदि तो फिर इन सबको गिनना करीब-करीब नामुमकिन ही दिखाई देता है। यही नहीं, आज तो जो 'एक' है वो 'दो' में बँट सकता है और जो दो है वो मिलकर 'एक' बन सकता है और ऐसा परमाणुओं के जगत् के अन्दर निरन्तर होता रहता है, कम से कम किताबों में हमें यही बताया जाता है।

जोड़ने की बात जरा थोड़ी देर के लिए छोड़ भी दें और घटाने की ओर ध्यान दें तो और भी अचम्भा हुए बिना नहीं रहेगा। जोड़ना तो कभी समाप्त होता ही नहीं, पर घटाने की समाप्ति होती है। पाँच में से चार घटायें तो एक बचेगा और पाँच में से पाँच घटायें तो क्या बचेगा? हम कहते हैं 'सिफ़र' बचेगा। पर 'सिफ़र' क्या होता है। सिफ़र का मतलब कुछ नहीं, पर जब कुछ नहीं बचा तो फिर क्या बचा? 'बचने' की बात करना ही बेवकूफ़ी है।

लेकिन आदमी का ज्ञान इन 'बेवकूफ़ियों' से ही आगे बढ़ता है, क्योंकि अगर हम ये नहीं माने कि कुछ नहीं है तो वास्तव में फिर विचार की गाड़ी आगे बढ़ेगी ही नहीं। इसलिए यह मान लेते हैं कि 'सिफ़र' कुछ है और उसके लिए एक निशान यानि चिह्न बना देते हैं।

पर बात इससे हल नहीं होती, क्योंकि सवाल ये उठता है अगर तीन में से चार घटायें तो क्या बचेगा। एक तरह से तो कुछ बचना ही नहीं चाहिये क्योंकि तीन में से तीन घटाने पर कुछ नहीं बचता तो तीन में से चार घटाने पर क्या बचेगा। लेकिन गाड़ी तो चलनी चाहिये, और इसलिए आदमी यह मानकर चलता है कि कुछ तो बचता ही है और उसका नाम '-1' देता है क्योंकि जैसे जाड़ने की प्रक्रिया कभी खत्म नहीं होनी चाहिए वैसे ही घटाने की भी। पर, इस जरा सी बात से उसी प्रकार एक अनन्त शृंखला का जन्म होता है जिसे अंग्रेज़ी में 'Negative number' कहते हैं। बात सीधी है, जैसे 1, 2, 3 से शुरू होने वाली संख्याओं की शृंखला अनगिनत है उसी प्रकार से –1 से शुरू होने वाली संख्याओं की शृंखला भी अनंत है, जैसे यहाँ 1, 2, 3, है वैसे वहाँ -1, -2, -3 । अगर इसे समझने में परेशानी हो तो उसे इस तरह हल किया जा सकता है कि जैसे वहाँ जोड़ने से संख्या बनती है वैसे ही यहाँ घटाने से बनती है। मिसाल के तौर पर अगर 1 में से 1000 घटायें तो क्या बचेगा? इसका जवाब सीधा-सादा होगा –999। पर, कहानी यहाँ खत्म नहीं होती। संख्याओं की माया अपार है और उस पर जितना सोचें अचम्भा हुये बिना नहीं रहेगा। आखिर संख्या किसे कहते हैं। वह जिसे जोड़ा, घटाया, गुणा और भाग किया जा सके। अब घटाने से जिन संख्याओं का सृजन होता है उनके बारे में गुणा, भाग, जोड़, घटाने के नियम होने चाहिये, लेकिन

ये नियम वैसे ही नहीं हो सकते जैसे एक, दो, तीन के बारे में होते हैं, कहीं न कहीं परेशानी ज़रूर है। परेशानी ही नहीं कुछ गलती भी ज़रूर है, क्योंकि अगर ये आधारभूत नियम हर संख्या शृंखला पर एक से लागू नहीं होते हैं तो उन संख्याओं को एक तरह का नहीं समझा जा सकता। Negative numbers के बारे में कुछ-कुछ ऐसी ही बात है क्योंकि इनके बारे में यह नियम सबको पता है कि अगर –2 को –2 से गुणा करेंगे तो जो संख्या आयेगी वह –4 नहीं होगी, बल्कि चार होगी। जरा सोचिये अगर 2 और 2 को गुणा करते हैं तो भी चार आता है और अगर –2 को –2 से गुणा करते हैं तो भी 4 आता है। अगर ऐसा है तो फिर 2 और –2 में क्या फ़र्क है।

इस जरा सी बात ने ज्ञान की प्रक्रिया के मूल में कितनी बड़ी समस्या पैदा की है वह सबको पता है लेकिन उसकी ओर ध्यान न देना सहज स्वभाव सा बन गया है। कुछ-कुछ उसी तरह का जैसे आदमी इस बात की ओर ध्यान नहीं देता कि आखिर उसे बीमार होना है, एक दिन चले ज़ाना है। ज्ञान के लिये इससे जो समस्या होती है वह यह है कि हर 'Equation' के लिए हमेशा दो हल हो सकते हैं, एक जिसे 'positive' कहते हैं व दूसरा जिसे 'negative' कहते हैं। हिन्दी में इसे 'सकारात्मक' और 'निषेधात्मक' कहा जा सकता है, हालांकि इसका मतलब ठीक-ठीक वही नहीं है। असली मतलब तो उन दो संख्या शृंखलाओं से है जिन्हें हमने जोड़कर और घटाकर बनाया है। लेकिन जैसे-जैसे संख्याओं के क्षेत्र का विस्तार होता है, वैसे-वैसे उन नियमों में भी मूलभूत परिवर्तन दिखाई देते हैं जिनके आधार पर गणित का विशाल प्रासाद खड़ा किया गया है। एक तरह से जोड़ना और गुणा करना एक ही तरह की बात समझी गई है और इसी तरह 'भाग' करना और 'घटाना'। किसी संख्या को भाग देने का अर्थ यही होता है कि उसमें से यह कितनी बार घटायी जा सकती है, और इसी तरह गुणा करने का अर्थ यही होता है कि जिसको गुणा किया गया है उसे उतनी बार जोड़ा जाये जिससे गुणा करने की बात कही गई है।

अगर 2 को 4 से गुणा करना है तो इसका मतलब यही है कि 2 को 4 बार जोड़िये और जो 2 को 4 से गुणा करने पर आयेगा वही 2 को अपने से 4 बार जोड़ने से आयेगा। इसमें जरा सी समस्या जरूर है और वो ये है कि 2 को 4 बार जोड़ने का मतलब क्या है? 2 को अगर अपने से 4 बार जोड़ें, तो 8 न आकर 10 आ जायेगा, यानि 2+2+2+2+2 तो 10 हो जाता है जबकि होना चाहिये 8। इसमें गलती यह मानी जाती है कि हमने पहले दो को 4 दफ़ा जोड़ने में शामिल किया है। क्योंकि 2 तो अपने आप में 2 था ही, उसके अपने से जुड़ा हुआ देखने का क्या मतलब होगा। पर कोई यह तो नहीं कहता कि 2 को सिफ़र से गुणा करने पर सिफ़र आता है 2 नहीं जबकि उसका मतलब ये होना चाहिये था कि 2 में कुछ भी मत जोड़िये पर अगर कुछ भी नहीं जोड़ेगे तो 2 केवल 2 रहेगा न

उसमें कुछ घटेगा न बढ़ेगा। कहने का मतलब यह है कि साधारण समझ में, और जो गणित को जानने वाले हैं उनकी समझ में भी जोड़ना और गुणा करने की क्रियाएँ हैं, लेकिन वे जिस प्रकार समझी जाती हैं उसमें कुछ फ़र्क है और जब तक उसकी ओर ध्यान नहीं दिया जायेगा तब तक हिसाब के व्यापार को समझ ही नहीं पायेंगे, हाँ, काम चलाने की बात तो और है। वह तो सब जगह ऐसे ही चलता है। जोड़ने व गुणा करने का फर्क Negative numbers में साफ दिखाई देता है। अगर –2 को –2 से जोड़ें तो –4 आता है और अगर –2 को –2 से गुणा करें तो 4 आता है। अब बताइये –4 और 4 में क्या ज़मीन-आसमान का भेद नहीं है? लेकिन इस जरा सी बात के सामने भी, चाहे कोई कितना ही बड़ा गणितज्ञ हो, वह आम तौर पर यही कहेगा कि जोड़ना और गुणा करना काफ़ी हद तक एक सी बात है।

अब भाग करने की बात करें, वह और भी अजीब है। किसी भी चीज़ को कितने भागों में बाँटा जा सकता है, क्या इसकी कोई गिनती की जा सकती है। एक का आधा हो सकता है, और आधे का फिर आधा, फिर उस आधे का आधा, इस तरह आपकी जितनी मर्जी हो और आपके पास समय हो, बैठे-बैठे बाँटते रहिये। इस प्रक्रिया का अंत नहीं होगा। वैसे ही जैसे जोड़ने या घटाने का। इसको आमतौर पर ऐसे लिखते हैं 1/10, 1/100, 1/1000 ... या 1/2, 1/3, 1/4, 1/5 ... कहने का सीधा-सादा अर्थ यह है कि इस विभाजन की प्रक्रिया का कोई अन्त नहीं है, लेकिन यह एक ऐसी समस्या को जन्म देती है जो जोड़ने-घटाने में नहीं है, और वह समस्या यह है कि आप कोई भी दो छोटी से छोटी भाग करने के बाद संख्या लें, तो भी उनके बीच एक और संख्या हमेशा हो सकती है। इसका दूसरा मतलब यह है कि अब तक जिन संख्याओं की बात की है उनमें हम हमेशा यह कह सकते हैं कि इसके बाद क्या आयेगा, लेकिन यहाँ ऐसा कहना सिद्धान्ततः असम्भव है। एक के बाद 2 आता है, 2 के बाद 3 और 1 और 2 के बीच में कुछ नहीं, 2 और 3 के बीच कुछ नहीं, लेकिन अगर हम पूछे कि 1/2 के बाद क्या है तो यह नहीं कहा जा सकता कि उसके बाद 1/3 होगा क्योंकि इनके बीच 1/4 भी हो सकता है 1/5, 1/7 भी हो सकता है। एक के कितने भाग किये जा सकते हैं, इनकी कोई गिनती नहीं और न ही हो सकती है, इसलिए जब भी यह सवाल पैदा होता है तो इसका जवाब यह है कि इन संख्याओं के बारे में यह तो हमेशा कहा जा सकता है कि कौन किससे ज़्यादा है या कम? लेकिन यह कभी नहीं कहा जा सकता है कि ये इसके बाद एक दम है क्योंकि जिसको भी उसके बाद कहेंगे उनके बीच में कोई नई संख्या हमेशा बनाई जा सकती है। हमने लिखा था 1/10, 1/100 पर 1/10 व 1/100 के बीच 1/1000 व 1/10000 व 1/100000 भी है। इस 1 को आप 10 बार बाँट सकते हैं या 100

बार या 1000 बार या लाख बार। असंख्य का मतलब यही है, जैसा गिनती गिनने में था, जितनी बार बाँटें उससे अधिक बार बाँटा जा सकता है।

क्या इस विभाजन करने की प्रक्रिया का कोई अंत है या नहीं। इस सवाल पर आदमी ने शुरू से सोचा है, क्योंकि वास्तव में जो चीज़ें हैं उनको तो बहुत देर तक बाँटा नहीं जा सकता। कुछ ही देर बाद ऐसा लगता है कि आगे और बाँटना मुश्किल है। कुछ लोगों ने इस बात को यहाँ तक बढ़ाया कि इसकी भी कोई सीमा है और यह सीमा उस अणु या परमाणु में समाप्त होगी जिसका आगे कोई विभाजन नहीं किया जा सकता। भारतीय दार्शनिकों ने इसे अणु कहा और यूनान के दार्शनिकों ने atom। आज के वैज्ञानिक ऐसा नहीं मानते कि इसका आगे विभाजन नहीं किया जा सकता पर उनको भी कहीं न कहीं रुकना होगा, चाहे वे उसका नाम इलेक्ट्रॉन दें या प्रोटोन या न्यूट्रॉन या कुछ और। हाँ, एक बात ज़रूर है कि अगर हम इस कल्पना को ही छोड़ दें कि संसार कुछ ठोस चीज़ों से बना है तो बात दूसरी तरह दिखाई देने लगेगी। इसके भी दो पक्ष हैं। एक यह कि अगर कोई वस्तु स्थान घेरती है, या देश में अवस्थित है, और अगर देश का विभाजन अनंत रूप में किया जा सकता है तो वस्तु को भी सदैव विभाज्य मानना पड़ेगा। दूसरी ओर वस्तु को हम इस प्रकार समझे ही नहीं और उसको सतत् प्रवाहमान, चिरंतन गतिशील शक्ति की तरह से देखें जैसा कुछ-कुछ प्रकाश या रोशनी के रूप में दिखता है। प्रकाश कहीं एक जगह स्थित नहीं होता, उसकी तरंगें तो हर क्षण फैलती ही रहती हैं और इस 'फैलने' का कोई अंत नहीं माना जा सकता। चाहे वो हमें दिखाई न दे। यही हाल शब्द की तरंगों का भी है। आज इनको 'Light waves' या 'sound waves' कहा जाता है, पर असली बात यह है कि इनको 'कणों' के रूप में नहीं देखकर 'तरंग' के रूप में देखते हैं। पर, फिर सवाल उठता है आखिर तरंग किसी 'चीज़' में उठती है जैसे कि समुद्र की तरंगें या हवा की तरंगें, इसी तरह से सोचने पर मनुष्य ने ऐसा सोचा कि ये तरंगें भी किसी 'चीज़' में जरूर उठती होंगी या उसके अन्दर फैलती होंगी जिसका नाम 'ईथर' दिया था। लेकिन आज इसकी सत्ता को कोई स्वीकार नहीं करता क्योंकि विचार का आग्रह यह है कि अगर किसी चीज़ को न मानने से काम चल जाये तो फिर उसे मानने की ज़रूरत क्या है।

पर मानो या ना मानो, इतना तो मानना पड़ता है कि सतत् गतिमान प्रवाह में चाहे उसका रूप कुछ भी हो समय लगता है और अगर समय लगता है तो समय का विभाजन हो सकता है वैसे ही जैसे संख्या का और अगर ऐसा है तो विभाजन की वही समस्या हमारे सामने आयेगी जो गणित ने हमारे लिए उपस्थित की थी।

बाँटना या भाग करना जिन समस्याओं को उठाता है उसी तरह गुणा करना भी, 2 को 2 से गुणा करके 4 आता है और इसलिए '4' को इस तरह देख सकते हैं कि वह 2 और 2 को गुणा करने से बना है। अगर ऐसा है तो हर संख्या

के बारे में यह पूछा जा सकता है कि वह संख्या कौन सी है जिसको अपने से गुणा करने के बाद यह संख्या मिलती है। 4 के बारे में तो स्पष्ट है कि वह 2 है, 9 के बारे में भी स्पष्ट है कि वह 3 है। 16 के बारे में स्पष्ट है कि वह 4 है, और 25 के बारे में 5। अब ज़रा सोचिये 2 को 2 से गुणा करते हैं तो चार आता है, 3 को 3 से गुणा करने पर 9 व 4 को 4 से गुणा करने पर 16 व 5 को 5 से गुणा करने पर 25 आता है। पर बीच की संख्याओं को कैसे देखें। 3 को छोड़ भी दें तो ये सवाल उठता है कि वह संख्या कौन-सी है जिसको अपने आपसे गुणा करने पर 5 मिलेगा। यही बात 6, 7, 8 के बारे में फिर 10, 11, 12, 13, 14, 15 के बारे में। कहने का अर्थ यह है कि किसी भी संख्या को लेकर हम आसानी से पता लगा सकते हैं कि उसे अपने से गुणा करके कौन-सी संख्या प्राप्त होगी, परन्तु उसका उत्तर बहुत ही मुश्किल दिखाई देता है। लेकिन हमें पता हो या ना हो, वह संख्या होनी तो जरूर चाहिए। इसी में गणित की वह पोल छिपी है जिस पर ध्यान देने से आदमी आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकता।

अब थोड़ा आगे देखिये, आखिर किसी भी संख्या को 1 बार ही गुणा क्यों किया जाये उससे अधिक बार भी किया जा सकता है। 2 को 2 से गुणा करिए और फिर 2 से गुणा करिये तो 8 आयेगा। चार बार करेंगे तो 16 आयेगा 5 बार करेंगे तो 32 आयेगा। 6 बार करेंगे तो 64 आयेगा। और यही बात आप 3 के साथ, व 4, व हर संख्या के साथ कर सकते हैं। उसको अपने से कितनी बार गुणा करें इसकी कोई सीमा नहीं, 10,000 बार या 1,00,000 बार भी कर सकते हैं। लेकिन समस्या तो तब पैदा होती है जब हम अपने से पूछें कि कोई भी दी हुई संख्या किस का परिणाम है जिसको हम अपने से 2 बार, 3 बार, 4 बार, 5 बार, 1000 बार, लाख बार गुणा करके इस संख्या को प सकते हैं। ऐसी संख्या होनी ज़रूर चाहिये, चाहे हमें मिले या ना मिले।

आखिर किसी भी संख्या को अपने से जितनी बार चाहे गुणा करके हम एक अन्य संख्या प्राप्त कर सकते हैं, अब इसी की उल्टी बात तो हम कह रहे हैं जिसको आमतौर पर इस प्रकार से लिखा जाता है·

2^2, 2^3, 2^4, ... इसी को इस तरह 2^n लिख सकते हैं जहाँ n कोई भी संख्या हो सकती है। 3, 4, 5 या और भी, 2^n कहने का मतलब सीधा है। साधारणत: स्क्वायर या क्यूब की बात करते हैं लेकिन यह सीमा कोई ज़रूरी नहीं है। किसी संख्या का खाली स्क्वायर ही हो या क्यूब ही हो, ऐसी बात नहीं है।

एक दफ़ा यह बात समझ में आ जाये तो फिर इसके बारे में कोई आश्चर्य नहीं होगा जैसे गिनती के अनगिनत होने में किसी को अचम्भा नहीं होता। लेकिन अगर कोई यह सोचे कि आखिर किसी संख्या की जो भी 'root' है उसकी भी 'root' हो सकती है और हो ही नहीं सकती बल्कि होनी चाहिये, क्योंकि इस 'होने' को तो कोई लगाम नहीं लगाई जा सकती। इस तरह कहा जा सकता है कि

'2' जो भी है वह कोई संख्या तो है ही, और अगर ऐसा है तो उसके बारे में भी ये कहा जा सकता है कि वो किसी ऐसी संख्या के गुणनफल के रूप में सोची जा सकती है जिसे अपने से गुणा करने पर वह संख्या प्राप्त होती है जिसे हम '2' कहते हैं। पर, यही बात जितनी बार चाहो, बढायी जा सकती है क्योंकि आखिर इस अनंत 'बढ़त' या प्रक्रिया को रोकने का कोई औचित्य तो दिखाई नहीं देता। यही नहीं, हम इसको आगे बढ़ाकर ये सोच सकते हैं कि आखिर जो भी 2 है, वह किसी न किसी ऐसी संख्या के गुणनफल के रूप में देखा जा सकता है जो अपने से अपने बार, अनेक बार, 2, 3, 4, 5, 6 ... यानि असंख्य बार गुणा करने पर प्राप्त होती है।

एक तरह से यह हनुमानजी की पूँछ जैसी लगती है जो अपने आप बढ़ती ही जाती है, फ़र्क ये है कि रामायण की कहानी में तो उनकी पूँछ एक ही तरफ बढ़ती थी, पर ये गणित की पूँछ तो अनंत दिशा में बढ़ती प्रतीत होती है, जिसका हिसाब लगाना मुश्किल है। अब सोचिये जो बात हमने 2,3,4 के बारे में कही है वही -2, -3, -4 के बारे में भी कही जा सकती है, उसको भी उसी तरह फैलाया जा सकता है। पता नहीं क्यों, हिसाब पर लिखने वालों ने इसे केवल -1 जैसी ही संख्याओं तक सीमित रखा है, जिसका कारण शायद यह था कि वह संख्या न (+) हो सकती है न (-), क्योंकि अगर (+) हो तो उसको अपने आप से गुणा करने पर (-) तो आ ही नहीं सकता और अगर (-) हो, तो भी (-) को (-) से गुणा करके (+) ही आता है। इसलिए वह एक अजीब संख्या है जो है तो सही, क्योंकि उसके 'होने' को जबरदस्ती मानना पड़ता है, पर वह न (+) है, न (-) है।

अभी तक हमने जितनी संख्याओं की बात की थी वे सब +या - थीं, लेकिन अब हम उन संख्याओं के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं जो न +होती हैं न - होती हैं। लेकिन -2 का घनमूल या 'क्यूब' यानि वह संख्या जो अपने आपसे तीन बार गुणा करने पर -2 होती है (-) हो सकती है क्योंकि - को - से गुणा करके +आयेगा और +को - से गुणा करने पर - आयेगा। इस तरह इस सम्बन्ध में यह अजीब बात उत्पन्न होती है। अगर (-) ऋणात्मक संख्याएँ हैं तो उनकी Root अगर सम हो यानि जो 2 से भाग की जा सकती है, तो वह न + होगी न - होगी, और अगर वह विषम है तो - होगी। अब कोई हिसाबदानों से पूछे कि इस तरह की बात गणित के मूल में कैसे स्वीकार की जा सकती है, और क्या वह उसके सारे ढाँचे को ही चरमरा नहीं देगी।

बात और भी लम्बी है, जितना बढ़ायेंगे उतनी ही विषम होती जायेगी। आखिर ये किसने तय किया है कि roots खाली positive या nagative number की ही हो, ratios या fractions की क्यों नहीं। आखिर कोई भी Fraction या Ratio लें जैसे 1/10 या 3/10 तो ऐसी कोई संख्या तो होगी ही जिसको अपने से गुणा करने पर यह संख्या प्राप्त होगी। fractions या Ratios की संख्या

अनगिनत है, लेकिन इनके बारे में वही सब सोचा जा सकता है जो इससे पहले 2 या 4 या -2 या -4 के बारे में सोचा था। पर यहाँ एक और समस्या है कि आखिर -1/4 का क्या मतलब है? और, यही नहीं अगर हम लिखे -1/4 या -1/-4 तो इसका क्या मतलब होगा। इसके बारे में भी क्या Roots की वही बात नहीं की जा सकती जो अन्य संख्याओं के बारे में करते हैं।

आम सोचने वाला न ये सवाल उठाता है, और न इनके बारे में सोचता है, और यही नहीं, हालांकि हिसाब की किताब में आमतौर पर यह नहीं होता लेकिन अगर गणित को समझना है तो उसे इस प्रकार ही समझा जा सकता है। इसको समझने के और तरीके हैं जिनकी चर्चा हम यहाँ अभी नहीं करेंगे। वह एक तरफ जिसको गणित या Arithmetic कहते हैं वहाँ से शुरू होती हैं जैसा कि हमने कुछ-कुछ किया भी था। दूसरी तरफ वह वहाँ से शुरू होती है जिसे Geometry या ज्यामिति कहते हैं जिसका सम्बन्ध 'देश' से है और शायद पुराने ज़माने से एक में गिनती गिनना, दूसरे में दूरी को नापना और यह तय करना कि किसी सीमित क्षेत्र का क्षेत्रफल क्या है?

जमीन को लेकर झगडे की बात सबको पता है और तौलने में बेईमानी करना या 'डंडी मारना' भी सभी को मालूम है पर इन दोनों से उठने वाली समस्याओं पर बहुत ही कम सोचा गया है। आखिर ज़मीन को नापें तो कैसे नापें? और किसी चीज़ का वज़न करें, तो कैसे करें। इन दोनों कामों के लिए हमें किसी ऐसी चीज़ की ज़रूरत होती है जिसके बारे में यह तय है कि इसका वज़न या इसकी लम्बाई बिल्कुल ठीक है।

पर यह कैसे पता लगेगा कि किसी चीज़ का वज़न या लंबाई बिल्कुल ठीक है। इसे जानने के लिए हमें किसी और वज़न का सहारा लेना पड़ेगा या किसी दूसरी लंबी चीज़ का। और फिर यही सवाल उसके बारे में भी उठाया जायेगा, और फिर उसी परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

आमतौर पर इन परेशानियों का हल यह मानकर किया जाता है कि हम सब मिलकर किसी वज़न या लंबाई की चीज को सबसे ज्यादा ठीक मानें। यही बात घड़ी के बारे में भी होती है। हम घड़ियाँ ठीक करते हैं और अपनी घड़ी ठीक घड़ी से मिलाते रहते हैं। लेकिन असली घड़ी कौन सी है, इसका जवाब कोई आसान नहीं है। हाँ, घड़ी की बात करना और वज़न की बात करना और लंबाई की बात करना कुछ अलग-अलग बातें हैं, हालांकि उनके बीच कुछ साम्य भी है।

तौलने के लिए हम जिस चीज़ का वज़न जानना चाहते हैं, उसे किसी दूसरी चीज़ से तौलते हैं और जब वो दोनों बराबर होते हैं तो हम कहते हैं कि पहली का वज़न दूसरी जैसा ही है। इसमें दो चीजों की ज़रूरत होती है। यही बात लंबाई को तय करने में भी होती है। इसके लिये कोई 'गज' चाहिये, फ़ीता चाहिये, जिसको

लेकर हम कपड़ा मापते हैं, ज़मीन नापते हैं या कोई और चीज़। दोनों को एक-दूसरे से मिलाते हैं, दोनों के सिरे मिल जाते हैं तो हम कहते हैं कि इसकी लंबाई इतनी है। घड़ी के बारे में ये बात कुछ अलग है। एक घड़ी को दूसरी के पास तो नहीं ले जाते लेकिन, हाँ, एक घड़ी को देखते ज़रूर हैं, फिर दूसरी को उससे मिलाते हैं।

घड़ी की बात बाद में करेंगे पहले नापने पर ध्यान दें। अगर थोड़ी देर के लिए यह मान भी लें कि हमने इस चीज़ की लंबाई नाप ली है तो भी उससे हमें यह तो पता नहीं चलेगा कि आखिर वह चीज़ कितनी जगह घेरती है। अगर, जिसे चौड़ाई कहते हैं वो नाप भी लें, तो भी यह पता नहीं चलेगा आखिर वह चीज़ कितना स्थान घेरती है। इसको तय करने के पहले ये मालूम करना होगा कि 'घेरने' का क्या मतलब है। घेरने का मतलब यही होगा कि जिस जगह के बारे में हम जानना चाहते हैं वो चारों तरफ से घिरी हो चाहे दीवार से या चाहे लकीर से या किसी और चीज़ से। मतलब यह कि उसकी हद होनी चाहिए जिसे सरहद भी कहते हैं। अब जब हमने जगह को चारों ओर से घेर लिया तो सवाल पैदा होता है कि यह जगह कितनी है और इसी को मालूम करने की विद्या का नाम अंग्रेज़ी में geometry है।

Geometry हिसाब-किताब से भी अजीब है, क्योंकि किसी जगह को किस तरह घेरा जाये, चारों तरफ से बाँधा जाये, इसका कोई एक तरीका नहीं है। आमतौर पर यह कहा जाता है कि कम से कम तीन लाइनें होनी चाहिए जो एक-दूसरे से किसी न किसी जगह मिलती हैं। यह ठीक है, पर ये बात यह मानकर चलती है कि लाइनें सीधी हों और इसीलिए लोग जब नापना होता है तो किसी रस्सी को सीधा बाँधकर नापते हैं। लेकिन ये ज़रूरी नहीं है। आपकी लाइन हर क्षण मोड़ खा सकती है और कितना मोड़, यह तय नहीं है। सिर्फ़ ज़रूरत इस बात की है कि वह घूम-घामकर वापस लौटे वहाँ जहां से शुरू हुई थी क्योंकि अगर वापस नहीं आती तो घेराबंदी नहीं होगी। यह बात इतनी अजीब नहीं है क्योंकि जैसे किसी जगह को हम तीन लाइनों से घेर सकते हैं वैसे चार या पाँच लाइनों से भी घेर सकते हैं और इसी तरह अनगिनत लाइनों से और, यही नहीं, गोल चक्कर से भी घेर सकते हैं।

लेकिन जितनी भी अनगिनत लाइनें हों, उन्हें हम सीधी मानकर चलते हैं। हाँ, गोल चक्कर के बारे में ऐसा नहीं मानते कि उसकी लाइन सीधी है, क्योंकि अगर ऐसा मानें तो उसे गोल चक्कर कहने का कोई मतलब नहीं है।

पर सवाल तो यह है कि सीधे और टेढ़े का मतलब क्या है। क्या आँख से दिखने पर सीधा दिखना 'सीधा' व टेढ़ा दिखना 'टेढ़ा' है।

अब इस नापने के लिए या यह पता लगाने के लिए दो अलग-अलग बातों पर ध्यान देना ज़रूरी है जिसकी तरफ आमतौर पर एक साथ ध्यान नहीं दिया

जाता। पहली ये कि वो जगह जिसके बारे में आप जानना चाहते हैं वो कैसी है? दूसरी ये कि उसको आप किससे कैसे नापेंगे। जगह हजारों किस्म की हो सकती है उसके बारे में फैसला करना हो कि वो कैसी है, तो यह तय तभी हो सकता है जब हम पहले यह फैसला कर लें कि हम उसको अपनी आसानी के लिए एक तरह से ही देखें। ऊँची-नीची हो, टेढ़ी-मेढ़ी हो, गड्ढे हों, तो हम आम तौर पर इनको नज़रअंदाज करने के लिए तैयार रहते हैं, और जब नापने की बात आती है तो हमारे अपने पास नापने के जो यंत्र होते हैं, तरीके होते हैं, औज़ार होते हैं उन पर ही भरोसा करके चलते हैं, जिनमें तब्दीली होती रहती है। लेकिन कहते किसी से नहीं, क्योंकि काम चलाना है, और जिससे काम चलता है उसी को परम सत् मानकर चलते हैं।

यह बात घड़ियों के बारे में बिल्कुल साफ नजर आती है। काल को कैसे नापें, क्योंकि समय को नापना देश को नापने के समान नहीं है। देश या स्थान या जगह एक स्थान पर अपने आप में स्थिर है, पर काल तो स्थिर नहीं होता वह तो हर मिनिट बदलता है, उसको कैसे नापें।

काल को नापने की कहानी लम्बी है और देश को नापने की कहानी से कहीं अधिक उलझी हुई है। आज करीब-करीब सब लोगों को यह पता है कि एक जगह रात होती है तो दूसरी जगह दिन होता है। जब एक जगह रात के 12 बजे होते हैं तो दूसरी जगह दोपहर के 4 बजते हैं। यही नहीं, जो लोग हवाई जहाज़ से सफ़र करते हैं और पेसिफिक महासागर के ऊपर उड़ान भरते हैं, उनको पता है कि एक जगह ऐसी आती है जहाँ दिन बदल जाता है, घड़ियाँ ही नहीं दिन भी बदल जाता है। उस लाइन के एक पार जायें तो अगर मंगल है तो बुध हो जायेगा, 4 तारीख है तो 5 हो जायेगी, और अगर उसी लाइन से 1 मिनिट बाद वापस आयें, तो बुध का मंगल व 5 के 4 हो जायेंगे। इससे बड़ी अजीब बात क्या हो सकती है। उसे Date Line कहते हैं। होता हर रोज़ है, हज़ारों लाखों लोग इस लाइन के पार आते-जाते हैं और जो लोग हवाई जहाज़ से यात्रा करते हैं वो तो अपनी घड़ी ही ठीक करते रहते हैं और जो लोग बड़े-बड़े हवाई अड्डों पर थोड़ी देर के लिए रुकते हैं, वे सामने दीवारों पर लगी घड़ियों को देखते हैं; जो यह बताती हैं कि न्यूयार्क में, लंदन व टोकियो में क्या बजा है और इस पर न किसी को ताज्जुब न अचम्भा। ऐसा क्यों?

आदमी को एक तरह से तो किसी चीज़ पर अचंभा नहीं होता अगर वह रोज़मर्रा हो, या बार-बार हो। लेकिन एक छोटी सी बात पर किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया है और वो ये है कि घड़ी को 'चलना' होता है। अगर घड़ी रुक जाये या चलना बंद हो जाये तो फिर वो नहीं बता सकती कि समय क्या है। वक्त को नापने के लिए घड़ी का 'चलना' शायद इसलिए ज़रूरी है कि वह उस चीज़ को नापती है जो स्वयं चलती है। काल का मतलब ही 'चलना' है या गतिमान होना है, जब जो चीज़ जहाँ रुक जाती है, वहीं एक प्रकार से काल भी बंद हो जाता है।

दिल की धड़कन या नब्ज़ का चलना या साँस का रुकना, ये सब घड़ी के बंद होने की निशानी हैं, और लोग चाहें न चाहें ये स्वीकार करते हैं कि अब सब कुछ बंद हो गया है। जिन्दगी की घड़ी भी क्या किसी को 'नापती' है।

जो भी हो, हमारे सामने समस्या वही रहती है। यह ठीक है कि काल को या समय को किसी ऐसी चीज़ से नापा जाता है जो स्वयं चलती है। लेकिन इस चलने की रफ्तार क्या है, वह तेज़ भी हो सकती है, और धीरे भी। कितनी तेज़ या कितनी हल्की, इसका अंदाज़ लगाना मुश्किल है। आदमी धीरे-धीरे, खरामा-खरामा चहलकदमी करता हुआ टहलता है, और हवाई जहाज 500 मी. प्र. घं. की रफ्तार से तो आसानी से चलते हैं। वैसे आइन्सटाइन का कहना था कि सबसे ज़्यादा रफ्तार रोशनी की होती है जो करीब-करीब 1,86,000 मी.प्र.से. चलती है। इससे ज़्यादा रफ्तार क्यों नहीं हो सकती, इसका जवाब तो उन वैज्ञानिकों के पास होगा जो इस पर विश्वास करते हैं। हाँ, सोचने की बात यह है कि इससे ज़्यादा रफ्तार 'सोची' जा सकती है, चाहे वह दुनिया के किसी कोने में या दुनिया की किसी चीज़ में पायी जाये या नहीं। दुनिया की 'असलियत' और हिसाब-किताब की दुनिया में यही फ़र्क है, जो कुछ है वह सीमित ही है, लेकिन गणित की संख्याएँ उससे अधिक हमेशा हो सकती है।

यही बात कुछ-कुछ इस बारे में भी सच है कि क्या जिसे हम चलना कहते हैं वह पूरी तरह बंद हो सकता है या रुक सकता है। वैज्ञानिक लोग ऐसा मानते हैं और कहते हैं कि जब तापमान सिफ़र से 238 डिग्री नीचे चला जाता है तब एक तरह से जिसे चलना कहते हैं, गतिशील होना कहते हैं, वह बिल्कुल बंद हो जाता है।

ठंडे होने का मतलब यही है कि गतिशीलता कम होगी और गर्म होने का मतलब कि गतिशीलता बढ़ गई है। पर, ये भी अजीब है, एक तरफ जहाँ रफ्तार की सीमा है, वहीं वैज्ञानिक लोग मानते हैं कि यह बताना मुश्किल है कि अधिकतम से अधिकतम तापमान क्या होगा। सूर्य के अंदर तापमान कितना अधिक है, यह बताना आसान नहीं है और अगर तापमान का अधिक होना किसी चीज़ के गतिशील होने पर निर्भर है तो यह समझना मुश्किल है कि तापमान की ऊपरी सीमा नहीं है तो गतिशीलता की सीमा कैसे होगी।

इससे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि वैज्ञानिक लोग जहाँ एक ओर मानते हैं कि एक हद पर पहुँचकर तापमान बिल्कुल वहाँ पहुँच जाता है जहाँ गतिशीलता करीब-करीब बिल्कुल समाप्त हो जाती है, दूसरी ओर वो इसकी कोई ऊपरी सीमा मानने को तैयार नहीं हैं। ऐसा लगता है कि वैज्ञानिक लोग अजीब आदमी हैं। उनको ये पता नहीं कि वे कब क्या कहते हैं। यही नहीं, वे एक 'ऐसी' movement को भी मानते हैं जो उनके अनुसार कहीं भी, कभी भी, बंद नहीं होती। उसे वह brownion movement कहते हैं। इन सबका उनके पास

जवाब ज़रूर होगा। आमतौर पर विज्ञान की किताबों में ऐसी बातें लिखी रहती हैं और लिखने वाले यह महसूस करते दिखाई नहीं देते कि वे जो कह रहे हैं उनके बीच इतना गहरा अंतर क्यों है।

एक ओर जहाँ किसी भी सीमित प्रदेश के बारे में यह समस्या उठती है कि उसमें जो घिरा हुआ प्रदेश है उसको कैसे नापा जाये, वहीं दूसरी ओर एक और समस्या उठती है। अगर हमारे सामने अलग-अलग दो सीमित प्रदेश हों तो उन प्रदेशों की ज़मीन एक-दूसरे से ज़्यादा होगी, या कम, या बराबर। लेकिन ये बात हर जगह तो आसानी से लागू नहीं की जा सकती। एक जगह को उठाकर दूसरी जगह कैसे ले जायेंगे, और अगर जिस चीज़ से भी एक जगह को नापेंगे उसी चीज़ से दूसरी जगह को भी नापना होगा। इसमें भी यह मानकर चलना पड़ता है कि कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें हम उठाकर नहीं ले जा सकते और कुछ को उठाकर ले जा सकते हैं। अब उठाकर ले जाने वाली चीज़ों व उनको जिन्हें उठा नहीं सकते, में क्या फ़र्क है और फिर हमारे पास यह मानने के लिए क्या आधार है कि किसी चीज़ को ले जाने से उस चीज़ में कोई फ़र्क नहीं पड़ता है, जिसे कम से कम आइन्सटाइन के बाद आज का विज्ञान स्वीकार नहीं करता।

इससे भी पेचीदा सवाल तो यह है कि क्या काल की गति वस्तुओं पर कोई प्रभाव नहीं डालती । क्या चीज़ें जैसी हैं वैसी ही रहती हैं। चाहे कितना ही समय बीत जाये। अगर ध्यान से देखें तो हमारा अनुभव इससे उल्टी बात बताता है, दुनिया की कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो एक सी बनी रहती है। होता यह है कि आप चाहें न चाहें, चीज़ों में परिवर्तन आता रहता है और अगर ऐसा है तो फिर जिस बात को मानकर चले थे कि किसी चीज़ को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में कोई तब्दीली नहीं आती, वह असंभव है। यह दूसरी बात है कि हम जो भी तब्दीली आती है उसे नज़रअंदाज़ करते हैं क्योंकि उससे कोई खास फ़र्क होता दिखाई नहीं पड़ता। हाँ, किसी चीज़ को ले जाने में समय लगता है, वो साफ दिखाई देता है। पर, अगर कोई चीज़ जहाँ है वहीं रहे, तो हमें ऐसा नहीं लगता कि समय का उससे कोई सम्बन्ध है। चीज़ में परिवर्तन तो आता है लेकिन इतना कम कि उसको देखने में मुश्किल आती है। पर, इस संदर्भ में भी एक ऐसा भेद है जिसकी ओर जब ध्यान देते हैं तो ऐसा लगता है कि काल का सम्बन्ध चीज़ों से एक सा नहीं है। जहाँ भी प्राण है, जीवन है वहाँ काल की गति आंतरिक लगती है, क्योंकि कुछ करो या ना करो अपने आप परिवर्तन होता ही नहीं रहता, साफ दिखाई भी पड़ता है। इसके विपरीत जहाँ प्राण नहीं है, जीवन नहीं है वहाँ बरसों गुजर जायें तो बहुत कम दिखाई देता है। जानवर मरते हैं, पेड़-पौधे सूखते हैं, पर पत्थर वैसे के वैसे ही रहते दिखाई देते हैं। और सूरज, चाँद और अन्य ग्रह व उपग्रह में हजारों, लाखों साल बीतने पर भी कोई खास फ़र्क नहीं पड़ता। होता ज़रूर होगा, पर दिखाई नहीं देता।

अगर ऐसा है तो फिर उन चीज़ों को ही नापा जा सकता है जिनमें आंतरिक तब्दीली कम से कम होती है, और जहाँ वह जितनी ज़्यादा होती है उतना ही कम नापा-तौला जा सकता है।

लेकिन यह बात विज्ञान को स्वीकार नहीं है क्योंकि वह यह मानकर चलता है कि घड़ी सब काल को एक ही तरह से नापती है। पर, अगर ऐसा नहीं है तो कहीं एक भयंकर भूल है, क्योंकि वह काल को देश की तरह ही देखती है।

गणित को ज्ञान का सर्वोत्कृष्ट रूप माना जाता है। शुरु से ही, सब लोग ये मानते हैं कि यह ऐसा ज्ञान है जो सब जगह, सब देश काल में एक सा रहता है, जिसकी सच्चाई के बारे में कभी कोई शक हो ही नहीं सकता। पर, एक ओर तो गणित के ज्ञान में तब्दीली और वृद्धि दोनों बराबर होती रहती है, और दूसरी ओर उसके बारे में जरा सा सोचने पर अनेकों ऐसी समस्याएँ उठती हैं जिनका कोई आसान हल दिखाई नहीं देता। ज्ञान के और क्षेत्रों में तो ये बात इस तरह समझी जाती है कि हम जिसके बारे में जानने की कोशिश करते हैं उसके बारे में हमें पूरा ज्ञान नहीं है और शायद न कभी हो सकता है। पर, गणित के बारे में भी अगर ऐसा है तो फिर आदमी की ज्ञान-सम्बन्धी परेशानियों का इलाज शायद कभी भी नहीं हो पायेगा। ऐसा लगता है कि आदमी की अक्ल में ही जिससे वह सब कुछ जानने की कोशिश करता है उसमें ही कोई गहरा खोट है या कमी है। यह मानने पर परेशानी और भी बढ़ती ही है, घटती नहीं। जानने की मजबूरी है और हमारे पास जो जानने का एकमात्र साधन है वो उस काम के लिए शायद उपयुक्त ही नहीं है जो उसे करना पड़ता है।

इस समस्या का एक हल शायद यह है कि हम ज्ञान को कर्म का आनुषंगिक मानें, उसके साधन के रूप में समझें और जहाँ तक वह हमारे कर्म करने में सहायता देता है वहाँ तक उसे स्वीकार करें। आजकल कई लोग ऐसा कहने लगे हैं, लेकिन अगर ऐसा है, तो कर्म के बारे में सोचना होगा और मनुष्य के कर्म के बारे में सोचना उससे भी अधिक मुश्किल है। कृष्ण ने तो गीता में यहाँ तक कहा है कि 'कवयोप्यत्र: मोहिता:'। कवि का अर्थ यहाँ 'कवि' से नहीं है बल्कि उस अर्थ से है जिसे वेदों में कविर्मनीषी कहने की कोशिश की थी।

लेकिन शायद गीता में जो कहा गया है उसका अर्थ ठीक-ठीक नहीं समझा गया। कृष्ण ने मोह शब्द का प्रयोग किया है और यह बताने की कोशिश की है, कर्म के सम्बन्ध में चिन्तन करते समय मोह से छुटकारा पाना अधिक मुश्किल है। ज्ञान के संदर्भ में भी मोह से छुटकारा पाना आसान नहीं होता, परन्तु यहाँ तो नामुमकिन सा ही लगता है लेकिन फिर भी कोशिश तो की ही जा सकती है और अगर मनुष्य के कर्म के बारे में सोचना ही असली सोचना है तो फिर आओ उसी के बारे में कुछ सोचें। ❑